सशस्त्र बलों में नेतृत्व की भूमिका

परिचय

"नेतृत्व का मतलब केवल कमान संभालना नहीं होता; यह अपने अधीनस्थों की देखभाल करना है।" ये शब्द साइमन सिनेक के हैं जो भारत के सशस्त्र बलों के संदर्भ में गहरे अर्थ रखते हैं, जहां नेतृत्व साहस, बलिदान और राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार है। सियाचीन की बर्फीली चोटियों से लेकर केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPF) द्वारा संरक्षित संवेदनशील सीमाओं तक, पोशाक में नेता संकट के समय तकदीरों को आकार देते हैं। आतंकवाद, साइबर युद्ध और आत्महत्याओं जैसे आंतरिक तनावों के दौर में सशस्त्र बलों का नेतृत्व केवल रणनीतिक ही नहीं, बल्कि संवैधानिक मूल्यों - न्याय, समानता और गरिमा - का मानवीय रूप है।

नेतृत्व का महत्व

सशस्त्र बलों में नेतृत्व सामान्य प्रबंधन से कहीं अधिक है; यह दृष्टि, साहस और सहानुभूति का संयोजन है। उदाहरण के लिए, कप्तान विक्रम बत्रा जिन्होंने 1999 के कारगिल युद्ध में "यह दिल माँगे मोर" के नारे से अपने सैनिकों को पीक 4875 जीतने के लिए प्रेरित किया। रणनीतिक नेता, जैसे चीफ ऑफ स्टाफ, तैयारी के लिए नीतियां बनाते हैं, जबकि ऑपरेशनल नेता बटालियन स्तर पर मिशन निष्पादन सुनिश्चित करते हैं। प्रेरणादायी नेता साहस और करुणा से तनाव के बीच मनोबल बनाए रखते हैं। 2023 में, भारतीय सेना के 13 लाख कर्मी और CAPF के 10 लाख कर्मी ने सीमाओं की सुरक्षा, विद्रोह से लड़ने और आपदा राहत में ऐसे नेतृत्व पर निर्भर किया।

चुनौतियां

आधुनिक युद्ध में नेतृत्व की परिधि बढ़ गई है। पारंपरिक युद्ध के अलावा, नेता साइबर खतरों से भी निपटते हैं; भारत को 2023 में 14 लाख साइबर हमलों का सामना करना पड़ा। नक्सलवाद जैसे आंतरिक सुरक्षा संकट भी सामने हैं। CAPF जैसे CRPF और BSF ने 2020-2024 में लगभग 730 आत्महत्याएं दर्ज की हैं, जिसमें CRPF में 2018-2022 के दौरान 230 मामले हैं। लंबे डिप्लॉयमेंट, सीमित छुट्टियां और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति कलंक इन घटनाओं को बढ़ाते हैं। महिला अधिकारी जो कुल बलों का 10% हैं, समावेशी नेतृत्व की मांग करती हैं, जो रूढ़ियों को तोड़े। भारत-चीन सीमा गतिरोध जैसे भू-राजनीतिक तनावों में नेताओं को कूटनीति और निर्णायकता का संतुलन बनाना होता है।

महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान

CAPF में आत्महत्याओं जैसे संकटों का समाधान नेतृत्व के केंद्र में है। CRPF में 84,866 और BSF में 19,987 रिक्त पद (2023) अधिभारित करते हैं, जो तनाव का कारण बनते हैं। नेताओं को खुली बातचीत को प्रोत्साहित करना चाहिए, जैसे CISF का प्रोजेक्ट मन, जिसने 2024 में आत्महत्याओं को 40% तक कम किया। नेशनल डिफेंस अकादमी (NDA) में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रशिक्षण नेताओं को संकट के प्रारंभिक संकेत पहचानने में सक्षम बनाता है। फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के नैतिक नेतृत्व के सिद्धांत "मैं अपने सैनिकों के लिए लड़ता हूं" से विश्वास बनता है कि कर्मी मूल्यवान महसूस करें। महिला और हाशिए के समूहों के लिए समावेशी नीतियां अनुच्छेद 14 के समानता सिद्धांत के अनुरूप हैं, जो एकता को बढ़ावा देती हैं।

प्रभावी नेतृत्व के लिए समाधान

परिवर्तनकारी नेता तैयार करने के लिए प्रणालीगत सुधार आवश्यक हैं। NDA, IMA और OTA में नेतृत्व प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और संकट प्रबंधन शामिल होना चाहिए ताकि अधिकारियों को CAPF की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार किया जा सके। CAPF के लिए एक समर्पित मानसिक स्वास्थ्य विंग, सेना के डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च की तरह, आत्महत्याओं को संबोधित कर सकता है। नियमित फीडबैक और जवाबदेही, जैसा कि सेना के सहकर्मी समीक्षा सिस्टम में है, विकास को बढ़ावा देती हैं। CRPF के SAMBHAV ऐप जैसे डिजिटल टूल 24/7 काउंसलिंग प्रदान करते हैं, लेकिन उनकी पहुंच बढ़ानी चाहिए। 60 करोड़ सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के माध्यम से सार्वजनिक अभियान मानसिक स्वास्थ्य के कलंक को तोड़ सकते हैं और सहायता लेने को प्रोत्साहित कर सकते हैं। मेजर जनरल शैलजा शर्मा जैसे महिला नेताओं को बढ़ावा देकर विविधता और सहनशीलता सुनिश्चित की जा सकती है।

निष्कर्ष

भारत के सशस्त्र बलों में नेतृत्व उसकी ताकत की आत्मा है, जो कर्तव्य, साहस और करुणा से निर्मित है। जैसे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा, "एक राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए उसके रक्षकों को सशक्त बनाओ।" आज के नेता रणनीतिक निर्माता, सहानुभूतिपूर्ण मार्गदर्शक और नैतिक आधार होने चाहिए, जो आधुनिक खतरों और आंतरिक संकटों जैसे आत्महत्याओं से निपटें। समावेशी, अनुकूलनीय और मानवीय नेतृत्व को बढ़ावा देकर भारत अपनी सेनाओं को मजबूती, एकता और संवैधानिक दृष्टि के अनुसार न्यायसंगत व सुरक्षित राष्ट्र के प्रतीक के रूप में बनाए रख सकता है।

TotalExam™